International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Impact Factor: 6.340, Volume 03, No. 02(IV), April - June, 2021, pp.189-194

पंत के काव्य में गांधी दर्शन

डॉ. रामेश्वर प्रसाद मीना*

प्रस्तावना

तुम मांसहीन तुम रक्तहीन
हे अस्थि–शेष ! तुम अस्थिहीन
हे शुद्ध–बुद्ध आत्मा केवल
हे चिर पुराण हे चिर नवीन!
तुम पूर्ण इकाई जीवन की
जिसमें असार भव शुन्य लीनः
आधार अमर, होगी जिस पर
भावी की संस्कृति समासीन!

बापू के प्रति कविता सुमित्रनंदन पंत

आधुनिक हिन्दी साहित्य की प्रमुख प्रवृतियों में छावाद एव नवीन चेतना का साहित्य है। छायावाद के प्रमुख आधार स्तंभ कवियों में सुनित्रानंदन पंत का नाम प्रकृति के सुकुमार कवि के रुप में विख्यात है। कविवर सुमित्रानंदन पंत कोमल भावनाओं के कवि है। प्रकृति से गहरी रागात्मकता उनके काव्य में दृष्टिगोचर होती है। पंत को हम छायावादी प्रगति समन्वादी उवं मानवतावादी रुपों मे देख सकते है। पंत प्रकृति की तरफ झके हुए होने के बाबजूद इनके काव्य में स्वामी विवेकानंद रामतीर्थ अरविंद दर्शन गांधी दर्शन को भी देखा जा सकता है। पंत छायावादी के सभी प्रमुख तत्वों मे समाहित है और इसी बजह से उके काव्य में छायावादी प्राकृतिक सौंदर्य को देखा जा सकता है। प्रकृति से प्रेम की अभिव्यक्ति के साथ राष्ट्र प्रेम समाज सुधार को भी पंत ने अपने काव्य का विषय बनाया और इनके काव्य में गांधी दर्शन को भी उसी प्रकार देखा जा सकता है।

समय के अनुरुप हिन्दी साहित्य में छायावादी और गांधी जी का भारत आगमन दक्षिण अफ्रिका से एक साथ हुआ था। जिस सम भार ब्रिटिश शासन और परम्परागत विषमता का कुप्रभाव या शोषण का शिकार हो रहा था उस समय गांधी जी का भारत के स्वाधीनता का आन्दोलन को शुरु करना बरदान साबित हुआ अब देश की राजनीति केवल वार्तालाप तक सीमित न रहकर जन सामन्य तक पहुंचकर आजादी के बीज रुप में अंकुरित होने लगी थी। सवाधीनता आन्दोलन अब लैकिक मूर्त रुप तथा जन सामन्य से जुडने लग गया था। यह स्वाधीनता आन्दोलन भक्ति आन्दोलन की भांति आम जन को भक्त न बनाकर जीवन की ज्वलंत समस को दूर करने के लिए भागीदार बना रहा था।

यही कारण था कि स्वाधीनता आन्दोलन भक्ति आन्दोलन से भी अधिक प्रासंगिक और जीवत रहा। इसी स्वाधीनता आन्दोलन में गांधी ने भी अपने व्यक्तित्व एवं विचारों से सभी को अपने विश्वास में लेकर देश भक्ति में जोड दिया। गांधी ही राजनीति से ज्यादा आध्यात्मता के निकट थे। उनकी दृष्टि राजनीतिक जीवन के साथ साथ सामाजिक सांस्कृतिक, आर्थिक आदि सभी समस्याओंकी ओर थी। इसी विचार से गांधीजी ने भारत में

* सहायक आचार्य हिन्दी, स्व. रा.पा. राजकीय महाविद्यालय, बॉदीकुई, राजस्थान।

आजादी की बजार चला दी। इसी गांधी की आंधी से पंत कैसे बच सकते थे। पंत ने महात्मा गांधी के सन 1921 के स्वाधीनता के भाषण सुने और उससे प्रभावित होकर कॉलेज छोड दिया। पंत की गांधी से 1934 में मुलाकात हुई औश्र उनके विचारों से प्रभावित कवि मन सात्विकता की और उन्मुख हो गया और यगांत काव की रचना कर डाली। गांधी के व्यक्तित्व और सिद्धान्तों से प्रभावित पंत का भावुक हदय उन्हे भावी संस्कृति आधार मानने लगा। गांधी ने राजनीति और नैतिकता के मध्य संबंध स्थापित करते हुए साणन और साध्य की पवित्रता पर बल दिया। उनका मानना था कि जैसे साधन होगे वैसे ही साध्य होगा। साधन की तुलना बीच से कर सकते है और साध्य की तुलना वृक्ष से अर्थाता जैसा बीज उगाओंगे वैसा ही वृक्ष बनेगा। यदि साधना ही भ्रष्ट होगे तो साध्य कितना भी माहन क्यो न हो वह अवश्य ही भ्रष्ट हो जायेगा, जिस प्रकार गलत रास्ते से सही मंजिल तक नहीं जाया जा सकता, जो सत्ता शासन भय व बल प्रयोग की नीव पर खडा हो ससे लोगो के मन में स्नेह और आदर की भावना पैदा नहीं की जा सकती। तो गांधी ने सत्याग्रह कर रास्ता चुना जो स्वच्छ और पवित्र था। उनके इसी मनोभाव को पंत अपने काव्य में अपनाया।

सहयोग सिखा शासित–जन को
शासन दुर्वह हरा भार
होकर निरस्त्र सत्याग्रह से
रोका मिथ्या का बल प्रसार
बहु भेद विग्रहों में खोई
ली जीर्ण–जाती क्षय से उबार
तुमने प्रकाश को कह प्रकाश
औ अंधकार को अंधकार। 2

बापू के प्रति कविता सुमित्रनंदन पंत

इसी प्रकार आगे चलकर पंत ने लोकापतन की रचना की जिसके प्रथम खण्ड में चार अध्याय है – पूर्व स्मृति, जीवन द्वार, संस्कृति द्वार और मध्यबिन्दु ज्ञान। द्वितीय खंड में तीन अध्याय है। कलाद्वार ज्योतिद्वार और उत्तरस्वपन प्रीति। पंत ने इनके भी अर्न्तविभाग किये है। भारतीय जनमानस में रामराज्य की परिकल्पना पौराणिक युग से एक आदर्श व्यवस्था के रुप में की जाती है। इसी लोक मर्यादा पुरुषोतम राम के पावन चरित्र का स्मरण पंत ने मर्यादा पुरुषोतम नामक लम्बी कविता में किया है।3 डॉ. कुमार विमता के अनुसार पंत नम अशोब वन में व्यक्त सीताराम सम्बन्धी भावनाओं को ही कुछ भेद और विस्तार से लोकापतन में प्रस्तुत किया है।

लेकापतन की पूर्व स्मृति नाम प्रथम अध्याय में पंत जी ने बतलाया है कि जागतिक सत्य व संसार से परे है और न ही तटस्थ है। जगत ही ईश्वर का आंगन है। राम, लक्ष्मण, सीता आदि चरित्र वास्वत में ईश्वर ही है।

लेकापतन की कथावस्तु मानव जीवन को सुन्दर बनाने की दृष्टि से सृजित की गई है। महाकाव्य की सुन्दर पुर आधुनिक गांव का प्रतीक है। वंशी और हरि लोकजीवन (सुन्दपुर) की दुर्दशा देखकर व्यथित है। लोकपतन में गांधी दर्शन की झलक नहीं अपितु वपुरी फिल्म है। देश मे स्वाधीनता संग्राम छिड जाता है। सक्रिय आन्दोलन देने के कारण अन्य स्वातंत्रय प्रेमियों के साथ हरि और वचंशी को भी जेल में डाल दिया जाता है।

लोकापतन में गांधी के समान स्वाधीनता संग्राम के लिए संघर्ष दिखया गया है। गांधी के योगदान का चित्रण लोगापतन के द्वितीय अध्याय में जीवनद्धार में किया गया है।

आत्मयुद्धि हिज अनशन व्रत में बापू की आस्था की अविचल।
तप्त स्वर्ण से निखर अग्नि में वे भू–जीवन का हरते मल।।

संस्कृति द्वार में आत्मदान के अन्तर्गत बापू के बलिदान को सामुहिक जीवन के विकास और अन्तर्राष्ट्रीयता के निर्माण का प्रमुख कारण माना है।

बापू मृत अमृत रहे वे,नैतिक जग के उन्नायक।
नित रक्त रहित आध्यात्मिक जीवन रस के अधिनायक–4

भारतीय स्वाधीनता का संघर्ष उस समय का संक्रमण काल ही था जिसके बीज पंत संक्रमण और हास में सुन्दरपुर के विहारन में देखते है। इसमें कवि नवीन जीवन मूल्यों की स्थापना के लिए आत्ममंथन करता है।

गांधी ने अपनी आत्मकथा सत्य के प्रयोग में लिखा है कि मेरे निरन्तर अनुभव ने मुझे विश्वास दिया दिया है कि सत्य से अलग कोई ईश्वर नहीं है। और सत्य की सिद्धी का एक मात्र उपाय अहिंसा है। अहिंसा भी अखण्ड साधना से ही सत्य का पूर्ण साक्षात्कार किया जा सकता है।–5 और अहिंसा की अखंड साधना करना आसान नहीं, इसमें बडे बडे ऋषि मुनि ज्ञानी और मनीषी आदि भी इसको नहीं निभा पाते तो साधारण मनुष्य की वश की बात क्या? पुरातन कान में महाभारत में अहिंसा परमों धर्मः की बात की गई। महात्मा बुद्ध और महावीर स्वामी ने भी अपने अनुदायियों को अहिंसा का ज्ञान दिया। पश्चिम में ईसा मसीह ने भी सारे संसार को अहिंसा की शिक्षा दी थी।

अतः अहिंसा वह प्रमुख सिद्धान्त है जिसके माध्यम से विरोधियों को भी प्रेम सहित जीता जा सकात है। अहिंसा को अपनाने वाले के लिए घृणा को कोई स्थान नही होता। उसकी दृष्टि में कोई भी घृणा का पात्र नहीं हो सकता न ही पापी हो सकता । बाईबल में इस वाक्य पाप से घृणा करो पापी से नही का गांधी ने पालन किया। अहिंसा का पुजारी अपने सहवरों के दुक्ष से द्रवित होकर उसके निवारण के लिए प्रयत्न करता है। वह अपने पराये का भेद मिटा देता है और जनसेवा में अपना जीवन अर्पित कर देता है। पंत ने भी गांधी के अहिंसा व सत्य को अपने काव्य में अपनाया–

सुखभाग खोतन आते सब
ओ तुम करने सत्य खोज
जगके मिट्टी के पुतले जन
तुम आत्मा के मन में मनोज
जडता हिंसा स्पर्धा में भर
चेतन अहिंसा नम्र ओज
पशुता का पंकज बना दिया
तुमने मानवता का सरोज –6

बापू के प्रति कविता सुमित्रनंदन पंत

लोकायतन में गांधी को छोडकर सभी पात्र कल्पित है लेकिन कुछ विचारक लोकपतन को बींसवी सदी का सर्वश्रेष्ठ हिन्दी महाकाव्य मानत है। सम्पूर्ण बीसवीं सदी में महात्मा गांधी जैसे शुभ्र पुरुष कोई और नही था। पंत के रजतशिखर संग्रह में छः काव्यरुपक है जिसमें शुभ्र पुरुष गांधी के जन्मदिवस 2 अक्टूबर 1950 को लिखे गये इस काव्य पक की भूमिका में पंत ने लिखा है शुभ्र पुरुष माहात्मा जी के तप पूत व्यक्तित्व का प्रतिक है। महात्मा जी भारतीय चेतना के आधुनिकतम रजत संस्करण है पंत ने गांधी के कार्यो पर प्रकाश डालते हुए कहा है कि गांधी ने ही देश को स्वाधीनता दिलायी, राजतंत्र कीर पीढिका पर लोकतंत्र की स्थापना करायी और सत्य की प्रतिष्ठा की।

बांध गए नव संस्कृति में तुम विश्व जनो को
मनुष्यता का मुख नव महिमा से मंडित कर
नर चरित्र का रुपान्तर कर जन गण मन को
श्रद्धा से पावन धरणी को स्वर्ग स्तात कर–7

शुभ्र पुरुष कविता

गांधी का मुख्य ध्येय मनुष्य के नैतिक मूल्सों को उठाना था राजनीति को उन्होने नैतिकता के साधन के रुप में अपनाया था। भारत मे भी सर्वप्रथम जब उन्होने स्वाधीनता आन्दोजन चलाया था उसका भी मुख्य ध्येय भारत को नैतिक मूल्यवान बनाना और उसके उत्थान के लिए कार्य करना था। गांधी ने बताया कि मनुष्य को भौतिक वस्तुओं का उतना ही प्रयोग करना चाहिए जितना उसके शरीर को स्वस्थ रखने के लिए अनिवार्य हो। गांधी प्रशासनिक स्तर पर सत्ता के विकेन्द्रीकरण के पक्षघर थे। केन्द्रीय सरकार को इतना ही अधिकार हो कि वह सब राज्यों को एकता के सुत्र में पिरा सके। परन्तु इतना अधिकार भी नहीं हो कि वह उन पर अपना प्रभुत्व स्थापित कर दे।

पंत ने अपने काव्य में गांधी के इन्ही विचारो को तरजीह दी है–

ये राज्य प्रजा जन साम्य तंत्र
शासन चालन के कृतक मान
मानस मानुषी विाकस शास्त्र
है तुलनात्मक सापेक्ष ज्ञान
भौतिक विज्ञानों की प्रस्तुति
जीवन उपरकण चयन प्रधान
मथ सुक्ष्म स्थूल जग बोले तुम –
मानव मानवता का विधान–8

सत्यकाम

गांधी का भारत गांवों मे निवास करता है। पंत ने भी ग्राम्या को ग्रामीण समाज को समर्पित किया है। इसकी अनेक कविताओं के शीर्षक गांव बोधक है जैसे भारत ग्राम, गाम देवता, ग्राम श्री, ग्राम चित्रण, ग्राम युवती, ग्राम नारी, ग्राम कवि, ग्राम दृष्टि, ग्राम वधु आदि पंत का मानना है कि सारा देश वस्तुत गांवो में ही तो बसता है।

सारा भारत है आत एक रे महाग्राम
वे परम्परा प्रेमी परिवर्तन से विभीत
ईश्वर परीक्ष से ग्रस्त भाग्य के दासक्रीत
कुल जाति कीर्ति प्रिय उन्हे नही मनुतत्व प्रीत–9

कवि पंत ने गांधी को आदर्श मानकर पुरे भारत को ग्रामीणें की नजर से देखा–

देख रहा है आज विश्व को मै ग्रामीण नयन से
सोच रहा हूॅं जटिल जगत पर जीवन पर जन मन से –10

गांधी ने भारतीय समाज में जाति सम्प्रदाय और ऊॅंच नीच की भावना का विरोध कि। भारतीय जनता के शोषण का भी विरोध किया। पंत ने भी अपने काव्य में इनका विरोध किया है–

वे नृशंस है वेजनबता के श्रम से पोषित
दुहरे धनी जोक जग के भू जिनसे शोषित।
नही जिन्हे करनी श्रम से जीविका उपार्जित
नैतिकता से भी रहते जो अतः अपरिचित।।–11

धनी लोग ढर्पी ढंकी, हठी और क्रूर होते है। इनकी भावनाएं कुत्सित और कलुषित होती है। ये विगतक्षयी संस्कृति के भूत है जिन्होने लोक जीवन को विषाक्त बना रखा है। पंत ने इनका घोर विरोध किया है।

शाथ्या की क्रीड कंदुक है जिनको नारी,
अहंमन्य वपे मूढ अर्थबल के व्याभिचारी
संरांगना संपदा सुराओं से संसेवित
नर पशु वे भू भार मनुजता जिनसे लज्जित–12

अंग्रेज पूर्तगाली फांसीसी आदि ऐसे ही धनपति थे जिन्होने भारत सहित विश्व के बहुत ादे देशों को लूटा व शोषण किया था।

पंत ने साहित्य सर्जन के दौरान यह महसुस किया कि मनुष्य का सर्वागिध विकास गांधीवादी ही कर सकता है। इसलिए कवि पंत ने अपनी समाजवाद गांधी बाद नामक कविता में इस भावना को व्यक्त किया–

गांधीवाद जगत में आया मानवता का नवमान।
सत्य अहिंसा से मनुजोचित नवसंस्कृति करने निर्माण।।
गांधीवाद हमे जीवन पर देता अन्तर्गत विश्वास ।
मानव की निःसीम शक्ति का मिलता उससे चिर आभास।।
व्यक्ति पूर्ण जब जीवन मे भर सकता है नूतन प्राण।
विकसित मनुष्यत्व कर सकता पशुता से जन का कल्यान
मनुष्यत्व का तत्व सिखताः निश्चित हमको गांधीवादी।
सामुहिक जीवन विकास की साम्य योजना है अविवाद।।–13

पंत का मानना है कि स्वस्थ सामाजिक जीवन और आत्म अन्नति दोने ही मनुष्य के लिए जरुरी है। शरीर का विकास सामाजिक जीवन से तथा आत्मा का विकास गांधीवाद से ही सम्भव है।

पंत ने वीणा मे लिखा है–

विश्व प्रेम का रुचिर राग, पर सेवा करने की आग।
इसको संध्या की लाली सी मां न मंद पड जाने दे।।–14

मानव मंगल और विश्व प्रेम की आंग पंत के काव्य में कभी भी मंद नहीं पडी बल्कि उसको पंत की लेखनी से सबल मिला है।

मानव निर्माण करें जन चरण मात्र को जिनके भू पर ।
हदय स्वर्ग में हो लय जिसका मन हो स्वर्ग क्षिजित से ऊपर।।

पंत को विश्वास था कि व्यक्ति विश्व के संग ईश्वर है इसलिए व्यक्ति और भारत देश को स्वतंत्रता अवश्य मिलेगी, पंत विश्वमंगल और नव मानवता के निर्माण की भावना से प्रेरित थे।

वाणी मेरी चाहिए तुझे क्या अंलकार।
तुन वहन करा सकों जनज न मे मेरे विचार
संसार को छोडकर ग्रहण किया
नर जीवन का परमार्थ– सार
अपवाद बने मानवता के
ध्रव नियमों का करने प्रचार
हो सार्वजनिकता जयी अजित।
तुमने जितत्व निज दिया हार
लौकिकता को जीवित रखने
तुम हुए अलौजिक है उदार–15

पंत का काव्य मानव मूल्यों की खान है धरोहर है यही भाव गांधी दर्शन का हिस्सा है। 1940 के बाद भी पंत की कविताओं को देखे तो उसमें आध्यत्मिकता नजर आती है। इस भाव के मूल में जाएं जो वहां हम गांधी को खडा पाते है। स्वर्ण किरण से लेकर वाणी तक की कविताओं में अधात्म देखने को मिलता है । इस भाव में गांधी का बडा प्रभाव है। पंत गांधी जी के सिद्धान्तों व उनके कर्तव्य पथ से बहुत प्रमावित थे।

सन्दर्भ ग्रथ सूची

1. बापू के प्रति कविता – सुमित्रानंदन पंत
2. बापू के प्रति कविता–सुमित्रानंदन पंत
3. कवि वर सुमित्रानंदन पंत – डॉ सुरेश चन्द्र गुप्त
4. संस्कृति द्वार – सुमित्रानंदन पंत
5. सत्य के प्रयोग – माहात्मा गांधी
6. बापू के प्रति कविता– संमित्रानंदन पंत
7. शुभ्र पुरुष कविता – सुमित्रानंदन पंत
8. सत्यकाम कविता –सुमित्रानंदन पंत
9. ग्राम कविता–सुमित्रानंदन पंत
10. गग्रमा कविता–सुमित्रानंदन पंत
11. कविवर सुमित्रानंदन पंत – डॉ. सुरेश चन्द्र गुप्त
12. कविवर सुमित्रानंदन पंत – डॉ. सुरेश चन्द्र गुप्त
13. समाजवाद गांधीवाद कविता– सुमित्रानंदन पंत
14. वाणी कविता – सुमित्रानंदन पंत
15. कविवर सुमित्रानंदन पंत – डॉ. सुरेश चन्द्र गुप्त

❖◆❖